

आदरणीय राजा साहब,

तीन पत्र दिखे हैं लगातार है वे सब अवस्था को भेंट हो गये हैं अवस्था आपका डर अवस्था ही जाता।

इस बीच निरंतर आपके पत्रों की प्रतीक्षा में अटका रहा हूँ।

वाक्येकी प्रकाशने ने मेरा संग्रह 'आवाज हमनी पहचानी बि लगी अपनी' की एक प्रति मुझे भेजी है। आपका निज अद्भुत लग रहा है। आपने आवरण जैसा बनाया था उसे गह-का-गह दिया है। प्रति आपको भेज रहा हूँ।

इस 'तनाव' में भी व्यस्त रहा हूँ। कुछ तबियत में भी शनिक दिन गते। वादित लगी है। इस देश का घटना बहुत भी तेज है। भारत अवन जनवरी-८२ में अन्तराष्ट्रीय कविता समारोह (कुम्भ) का आयोजन करने जा रहा है। जीवन पृथ्वी के देशों के कवि आ रहे हैं। इनमें आधिकांश कवियों की कविताएँ तनाव में प्रकाशित हो चुकी हैं।

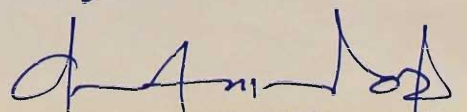
इस समय अकाल के बाद बाढ़, हैजा, आंत्रशोथ की दुर्घटनाएँ चल रही हैं। अर्थात् आइलैंड एम्बुलेंस ड्री बोटीयों सहित एक नदी में गिर गये। अम्मी मारे गये। दिल्ली में हैजा, आंत्रशोथ से २५० मौतें उठ गई हैं। लाकड़ी आँकड़ों से के लाख। पता नहीं किनो का बिधन उठा होगा। राजनीति इतना भी चल रहा है। तेजी के साथ घटना बहुत चल रहा है। इस बीच रचनात्मक कार्य भी करूँ। उसके करने के लिए संघर्ष भी।

आपने समाचार विज्ञान से कीर्तिका।

अतिरिक्त काम निरंतर चल रहा होगा।

आदरणीय भाभीजी को प्रणाम करें। अब तो अच्छी ही आप आ रहे हैं। इस काकाजी बाई ने आपको आशीर्ष दिखे हैं। पुनीत के प्रणाम स्वीकार। गन्धी जी समय के कुछ कंश मुझे भी दें।

सत्य प्रसन्न होंगे। वन कीर्तिका - 31/8/88


आपका.